ध्यान ज्योति

ध्यान ज्योति से आत्मज्योति जलती है।
आत्मज्योति से ज्ञान ज्योति जलती है।
ज्ञान ज्योति से ही धर्मज्योति जलती है।
धर्म ज्योति से ही सुकर्म ज्योति जलती ह।
सब का मूल ध्यान ही है।

अत: पहले ध्यान ज्योति को जलाना चाहिए।
ध्यान ज्योति आनापानसति द्वारा ही शुरु होती है।
वह विपस्सना में और भी प्रकाशमय हो जाती है।
सबका मूल ध्यान ही है।

ज़िंदगी में उत्साह और आनंद का मूल ध्यान ही है।
समस्त प्राणियों में दोस्ता के लिए भी ध्यान ही मूल है।
इतना ही नहीं, समस्त धर्मो की समरसता के मूल में भी ध्यान ही है।
विद्या और विनम्रता पाने के लिए भी ध्यान ही मूल है।

अत: ध्यान ज्योति को सदा के लिए जलाएँ।
हमेशा अपने और दूसरों के भीतर ध्यान ज्योति जलाएँ।

मंदिरों में मूर्ति के सामने कर्पूर जलाने का अभिप्राय क्या है?
इस शरीर रूपी मंदिर में मन रूपी कर्पूर को जला कर,
बद्धि नामक ज्योति को जलाना चाहिए।

इस कांति में ही हम अपने आप को समझ सकेंगे।
इस शरीर के भीतर भरे अंधकार को निकालना चाहिए।
शरीर के अन्दर की मलिनता अर्थात् पूर्वजन्म कृत पापों के कलुष को हमें निकाल देना है।

हर घर में ध्यान ज्योति को जलाना है।
हर व्यक्ति में ध्यान ज्योति को जलाना है।
नित्य रोगी को नित्य भोगी बनने के लिए
ध्यान ज्योति को जलाना चाहिए।